066

MAHD-01

December - Examination 2019

MA (Previous) Hindi Examination

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Paper - MAHD-01

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 80**

निर्देश : इस प्रश्न–पत्र के तीन खण्ड हैं – 'अ', 'ब' और 'स'। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(खण्ड – अ) **$8 \times 2 = 16$**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम 30 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(i) 'पृथ्वीराज रासो' में वर्णित किन्हीं दो कथानक रूढियों का उल्लेख कीजिए।

(ii) 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' रचना के रचनाकार कौन हैं?

(iii) ''जाग पियारी अब का सौवे'' उक्त रेखांकित शब्द में कबीरदासने 'पियारी' किसे कहा है?

(iv) इश्क मजाजी और इश्क हकीकी का अर्थ बताइए।

(v) सूफी साधना में 'शरीयत' का क्या आशय है?

(vi) घनानन्द को 'प्रेम की पीर' का कवि क्यों कहा जाता है?

(vii) तुलसीदास की समन्वयवादी दृष्टि उनके काव्य में किस प्रकार अभिव्यक्त हुई है?

(viii) भूषण के किन्हीं दो काव्य ग्रंथों के नाम लिखिए।

(खण्ड – ब) **4 × 8 = 32**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 8 अंकों का है।

2) निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

समुद रूप गोरी सुबर, पंग ग्रेह भय कीन ।
चाहुआन तिन बिबध कै, सो ओपम कवि लीन ।।
सो ओपम कवि लीन, समर कग्गद लिए हथ्थं ।
भिरन पुच्छि बट सुरंग, बंधि चतुरंग रजथ्थं ।।
समर सु मुक्कलि सोर, लोह फुल्यो जल कुमुदं ।
रा चावंड जैत सी, रा बड़ गुज्जर समुदं।।

3) निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

नन्दक नन्दन कदम्बे तरुतरे टरलि बोलाव ।
समय संकेत निकेतन वइसल बेरिबेरि बोलि पठाव ।।
सामरी तोरा लागि अनुखने बिकल मुरारि ।
जमुनाक तिर उपवन उद्‌वेगल, फिरिफिरि ततहि निहारी ।
गौरस बिके निके अबइते जाइते, जनिजनि पुंछवनवारि ।।
तोहे मतिमान सुमति मधुसूदन, वचन सुनह किधु मोरा।
भनइ विद्यापति सुन वरजौवति, वन्दहु नन्दकिसोरा।।

4) निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

भा भादों दूभर अति भारी । कैसे भरौं रैनि अँधियारी ।।
मंदिर सून पिउ अनतै बसा। सेज नागिनी फिरिफिरि डसा ।।
रहौं अकेलि गहे एक पाटी । नैन पसारि मरों हिय फाटी ।
चमकि बीजु घन गरजि तरा सा। बिरह काल होइ जीउ गरासा ।।
बरसै मघा झकोरि झकोरी। मोर दुइ नैन धुवै जस ओरी ।।
धनि सूखै भरे भादौं माहा। अवहुं न आपुन्हि सींचेन्हि नाहा ।।
पुरबा लाग भूमि जल पूरी। आक जवास भई तस झूरी ।।
थल जल भरे अपूर सब, धरति गगन मिलि एक
धनि जोबन अगवाहमहँ, दे बूड़त, पिउ।

5) कबीर के काव्य में सामाजिक चेतना पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिए।

6) सूरदास जी की भक्ति भावना का वर्णन कीजिए।

7) मीरा के काव्य में लोकतत्व का उल्लेख कीजिए।

8) पद्माकर के काव्य में प्रकृति का चित्रण किन किन रूपों में हुआ? स्पष्ट कीजिए।

9) रीतिकालीन काव्य परम्परा में भूषण के काव्य–वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

(खण्ड – स) $2 \times 16 = 32$

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम 500 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का है।

10) ''भक्तिकाल के रामभक्ति काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास हैं।'' इस कथन का उदाहरणसहित विवेचन कीजिए।

11) 'पद्मावत् के आधार पर मलिक मोहम्मद जायसी के काव्य सौन्दर्य का मूल्यांकन कीजिए।

12) मीरा के काव्य में भाव पक्ष एवं कलापक्ष का विवेचन कीजिए।

13) रीतिमुक्त काव्यधारा का परिचय देते हुए घनानंद की काव्य–सम्पदा पर प्रकाश डालिए।